17
FRIDAY

जहाँगीर की धार्मिक नीति

FEBRUARY 2012

JANUARY 2012

M	T	W	T	F	S	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

FEBRUARY 2012

M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29				

Appointments ~ Meetings

048-318 • WEEK 07

8.00

9.00

10.00

11.00

12.00

1.00

2.00

3.00

4.00

5.00

6.00

7.00

जहाँगीर अपने पिता की नीति को उपयोगी समझता था और उसने इसे अपनाया भी। उनका जीवन उकबरता के वातावरण में आरम्भ हुआ था। हिन्दू पत्नी से उसका सम्पर्क था। जजिया और तीर्थयात्रा कर उसके समय में भी बंद रहे और मंदिर बनवाने की सुविधा हिन्दुओं को प्राप्त रही।

जहाँगीर के शासनकाल में कुछ अप्रिय घटनाएँ भी थी। उसने कुछ स्थानों पर मंदिरों को तोड़वाया और सिक्खों के गुरु अर्जुनदेव को मृत्यु दण्ड दिलवाया।

ये निर्णय कुछ इतिहासकारों द्वारा जहाँगीर के धार्मिक कट्टरता के परिणामस्वरूप प्रस्तुत किये जाते हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि जहाँगीर ने उन मंदिरों को तोड़वाया जो उसके विचारानुसार अंधविश्वास के केन्द्र में थे।

गुरु अर्जुनदेव को मृत्यु दण्ड राजनैतिक कारणों से दिया गया, क्योंकि उन्होंने विद्रोही शाहजादे खुशरो का समर्थन किया था। यह भी स्मरणीय है कि शेख अहमद सरहिन्दी का प्रभाव काफी विस्तृत हो चुका था। हालांकि जहाँगीर ने शेख अहमद सरहिन्दी को बंदी बनाया, लेकिन उनके प्रभाव में कोई कमी नहीं आया और जहाँगीर को अकबर की तुलना में अपनी सहिष्णुता की नीति को निर्धारित सीमा के अंदर ही रखना पड़ा।

Evening

शाहजहाँ के समय इस नीति के रूप में और बदलाव आया। वह अपने व्यक्तिगत जीवन में इस्लाम के प्रति अधिक आस्था और श्रद्धा व्यक्त करने में विश्वास रखता था। दरबार में कट्टरपंथी के बढ़ते प्रभाव के कारण वह एक ऐसी नीति अपनाने में अभिरुचि रखता था, जो इस्लाम के प्रति उसके विश्वास को स्पष्ट पुष्टि कर सके। उसने भी नए मंदिरों को तोड़ने का आदेश 1633 ई० में दिए।

PRIORITIES

Scanned with CamScanner

Appointments ~ Meetings

जुझार सिंह बुंदेला के विद्रोह के समय भी उसने दण्ड के रूप में मंदिरों को तोड़वाया। उसने इस्लाम धर्म के प्रचार का समर्थन किया और धर्म परिवर्तन करने वाले हिन्दुओं को सुविधाएँ प्रदान की। लेकिन उसने हिन्दु प्रजा पर जजिया पुनः लागू नहीं किया। हिन्दुओं को उच्च पद प्राप्त रहे। हिन्दु कवियों और कलाकारों को प्रश्रय मिलता रहा। अतः शाहजहाँ की नीति हिन्दु विरोधी नीति नहीं थी, यद्यपि इसमें इस्लाम के प्रति अधिक आस्था प्रकट की गई थी।

सम्भवतः ऐसे उपाय राजनैतिक लाभ के लिए किए गए, क्योंकि शाहजहाँ ने शासन बनने पर अपने संबंधियों की हत्या कराई थी जिससे असंतोष की भावना उत्पन्न हुई थी। इसलिए उसने कट्टरपंथी मुसलमानों का समर्थन प्राप्त करने के लिए अपनी नीति निर्धारित की। आगे चलकर वह इस पर पूरी तरह कायम नहीं रहा क्योंकि दारा और जहाँआरा के प्रभाव से वह उदारता की ओर आकर्षित हो गया था।

इसमें कोई संदेह नहीं कि शाहजहाँ की नीति से धार्मिक कट्टरपंथियों को जो आशा बंधी थी, वह इसी नीति के परित्याग से निराशा में बदल गई।

औरंगजेब ने इसका लाभ उठाया और उत्तराधिकार के संघर्ष में दारा शिकोह (अपने बड़े भाई) को विधर्मी और अपने आप को एक धर्मनिष्ठ मुसलमान के रूप में उसने प्रस्तुत किया। दरबार में कट्टरपंथियों के प्रभाव में वृद्धि के कारण औरंगजेब ही उत्तराधिकार के युद्ध में अंततः सफल रहा।

Scanned with CamScanner